International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 15-09-2025, Accepted: 14-10-2025, Published: 30-10-2025
Volume 7, Issue 5, 2025, Page No. 137-142

स्वामी विवेकानन्द एवं ऋषि अरविंदो के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 जनार्दन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ एजुकेशन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उन्हें यह अफ़सोस की बात नहीं थी कि शिक्षा की मौजूदा प्रणाली ने किसी व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा करने में सक्षम नहीं बनाया, न ही उसने उसे आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान की शिक्षा दी। विवेकानंद के लिए, शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं थी, बल्कि कुछ अधिक सार्थक थी; उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा मानव–निर्माण, जीवनदायिनी और चरित्र–निर्माण होनी चाहिए। उनके लिए शिक्षा नेक विचारों का समावेश था। श्री अरबिंदो (1956) की 'शिक्षा' की अवधारणा न केवल जानकारी प्राप्त करना है, बल्कि "विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त करना" है, वे बताते हैं, "केवल एक है और शिक्षा के साधनों और आवश्यकताओं का प्रमुख नहीं है: इसका केंद्रीय उद्देश्य मानव मन और आत्मा की शक्तियों का निर्माण है"। अरबिंदो ने जोर दिया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य के अपने भीतर ईश्वरीय अस्तित्व का कोई न कोई अंश होता है और शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति से उसकी संपूर्णता के साथ उसका अध्ययन कर सकती है।

मूल शब्द: अभिव्यक्ति, आध्यात्मिक विकास और शिक्षा

परिचय
स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा मनुष्यों में पहले से ही विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उन्हें यह खेद था कि शिक्षा की मौजूदा प्रणाली ने किसी व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा करने में सक्षम नहीं बनाया, न ही उसने उसे आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान की शिक्षा दी। विवेकानंद के लिए, शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं थी, बल्कि कुछ अधिक सार्थक थी; उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा मानव–निर्माण, जीवनदायिनी और चरित्र–निर्माण होनी चाहिए। उनके लिए शिक्षा नेक विचारों का समावेश था। श्री अरबिंदो (1956) की 'शिक्षा' की अवधारणा न केवल जानकारी प्राप्त करना है, बल्कि "विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त करना" है, वे बताते हैं, "केवल एक है और शिक्षा के साधनों और आवश्यकताओं का प्रमुख नहीं है: इसका केंद्रीय उद्देश्य मानव मन और आत्मा की शक्तियों का निर्माण है"। अरबिंदो ने जोर दिया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य के अपने भीतर ईश्वरीय अस्तित्व का कोई न कोई अंश होता है और शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति से उसकी संपूर्णता के साथ उसका अध्ययन कर सकती है।

उद्देश्य
स्वामी विवेकानंद और अरबिंदो के शैक्षिक दर्शन पर चर्चा करने के लिए।

कार्यप्रणाली
यह पूरी तरह से स्वामी विवेकानंद और अरबिंदो के शैक्षिक दर्शन से संबंधित साहित्य समीक्षा पर आधारित है।

परिणाम और चर्चा
स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उन्हें यह अफ़सोस की बात नहीं थी कि शिक्षा की मौजूदा प्रणाली ने किसी व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा करने में सक्षम नहीं बनाया, न ही उसने उसे आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान की शिक्षा दी। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा के प्रति अत्यंत व्यापक द्रष्टिकोण था| उन्होंने तात्कालिक शिक्षा का विरोध करते हुए कहा "आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षायें उत्तीर्ण कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता है| परन्तु वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिये तैयार नहीं कर सकती तथा जो शेर जैसा साहस नहीं पैदा कर सकती ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?" स्वामी जी ने शिक्षा को ऐसे ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार किया है जो मनुष्य का भौतिक एवं अध्यात्मिक दोनों प्रकार का उन्नयन कर सके|

"शिक्षा वह मात्रा नहीं है जो हम आपके दिमाग में डालते हैं और वहां दंगा करते हैं, बिना पचे, आपके पूरे जीवन में। हमारे पास जीवन निर्माण, मानव निर्माण और चरित्र निर्माण विचारों को आत्मसात करना होगा। यदि आपने पांच विचारों को आत्मसात कर लिया है और उन्हें अपना जीवन और चरित्र बना लिया है, तो आपके पास किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है, जिसने पूरे पुस्तकालय को ह्रदय में बसा लिया है|"

स्वामी विवेकानंद ने जनता को केवल सकारात्मक शिक्षा देने पर जोर दिया, क्योंकि नकारात्मक विचार मनुष्य को कमजोर करते हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा, अगर युवा लड़कों और लड़कियों को प्रोत्साहित किया जाता है और हर समय अनावश्यक रूप से आलोचना नहीं की जाती है, तो वे समय में सुधार करने के लिए बाध्य हैं। न्यू यॉर्क में,स्वामी विवेकानंद आयरिश उपनिवेशवादियों को आते–जाते देखते थे जो पददलित, ठिठुरते हुए, घर में सभी संपत्ति से वंचित एवं दरिद्र थे, जिनके पास एकमात्र सामान, एक छड़ी और उस पर लटकी हुई गठरी थी , उनके ठिठकते कदम और उनकी आँखों में भय था । अगले छह महीनों में विवेकानंद ने एक बिल्कुल अलग नजारा देखा– आदमी सीधा चलता है, उसकी पोशाक बदल जाती है। स्वामी विवेकानंद ने इसका कारण जानने का प्रयास किया| उन्होंने कहा, यदि वेदांत की व्याख्याओं से इस घटना को देखा जाये तो आयरिश व्यक्ति को अपने ही देश में अवमानना से घिरा रखा गया था – पूरी प्रकृति उसे एक स्वर से कह रही थी – "पैट, तुम अब और आशा न रखो, तुम गुलाम पैदा हुए हो और रहोगे।" अपने जन्म से इस प्रकार बताए जाने के बाद, पैट ने इस पर विश्वास करना शुरू कर दिया कि वह बहुत नीच है। जबकि जैसे ही वह अमेरिका पर उतरा, हर तरफ उसे यही प्रोत्साहन मिला – "पैट, तुम एक

आदमी हो जैसे हम हैं, यह आदमी है जिसने सब किया है, तुम्हारे और मेरे जैसा आदमी सब कुछ कर सकता है, हिम्मत रखो!" पैट ने सिर उठाया और देखा कि ऐसा ही है, उसके भीतर का आत्मविश्वास फिर से जाग उठा। स्वामी विवेकानंद को भी ऐसा ही लगता है, युवा लड़के और लड़कियों को जो शिक्षा मिलती है वह बहुत नकारात्मक है। उनका मानना है कि इस शिक्षा से उनमें आत्मविश्वास या स्वाभिमान नहीं आता, इसलिए स्वामी विवेकानंद के अनुसार बच्चों को सकारात्मक शिक्षा ही देनी चाहिए।स्वामी विवेकानंद ने महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति को महान, प्रत्येक राष्ट्र को महान बनाने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं:

- अच्छाई की शक्तियों पर विश्वास |
- ईर्ष्या और संदेह का अभाव।
- उन सभी की मदद करना जो अच्छा बनने और करने की कोशिश कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद ने सुझाव दिया कि ईर्ष्या और दंभ को त्यागकर दूसरों के लिए एकजुट होकर काम करना सीखें। उन्होंने कहा, पवित्रता, धैर्य और दृढ़ता सभी बाधाओं को दूर करती है। उन्होंने साहस रखने और काम करने का सुझाव दिया। धैर्य और स्थिर कार्य, स्वामी विवेकानंद के अनुसार, सफलता पाने का यही एकमात्र तरीका है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार "विश्वास, स्वयं में विश्वास और ईश्वर में विश्वास– यही महानता का रहस्य है। स्वामी विवेकानंद ने देखा कि दुनिया का इतिहास कुछ ऐसे लोगों का इतिहास है, जिन्हें खुद पर विश्वास था, और ये विश्वास ही है जो अन्दर के देवत्व को बाहर लाता है

अतः उन्होंने कहा, अगर लोगों को तीन करोड़ हिंदू देवी–देवताओं और विश्व के सभी अन्य देवताओं में विश्वास हैं, किन्तु खुद पर विश्वास नहीं है, तो कोई मोक्ष नहीं होगा। विवेकानंद बताते हैं कि वर्तमान शिक्षा का दोष यह है, कि इसका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। एक मूर्तिकार को इस बात का स्पष्ट आभास होता है कि वह संगमरमर के ब्लॉक से क्या बनाना चाहता है; उसी तरह, एक चित्रकार जानता है कि वह क्या पेंट करने जा रहा है। लेकिन उनके अनुसार ,एक शिक्षक को अपने शिक्षण के लक्ष्यों के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। स्वामीजी ने अपने वचनों और कर्मों से यह स्थापित करने का प्रयास किया कि सभी शिक्षा का अंत मनुष्य बनाना है। वह अपने समग्र वेदांत के दर्शन के आलोक में इस मानव–निर्माण शिक्षा की योजना तैयार करता है। वेदांत के अनुसार, मनुष्य का सार उसकी आत्मा में निहित है, जो उसके शरीर और मन के अतिरिक्त उसके पास है। इस दर्शन के साथ, स्वामीजी ने शिक्षा को 'मनुष्य में पहले से ही विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति' के रूप में परिभाषित किया है। शिक्षा का उद्देश्य हमारे जीवन में पूर्णता को प्रकट करना है, जो कि हमारे आंतरिक स्व का स्वभाव है। यह पूर्णता उस अनंत शक्ति की प्राप्ति है जो सब कुछ और हर जगह– अस्तित्व, चेतना और आनंद (सच्चिदानंद) में निवास करती है। इस पूर्णता की आवश्यक प्रकृति को समझने के बाद, हमें इसे अपने आंतरिक स्व से पहचानना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को अपने अहंकार, अज्ञानता और अन्य सभी झूठी पहचान को खत्म करना होगा, जो रास्ते में खड़े हैं। नैतिक शुद्धता और सत्य के लिए जुनून से दृढ़ ध्यान, मनुष्य को शरीर, इंद्रियों, अहंकार और अन्य सभी गैर–आत्म तत्वों को पीछे छोड़ने में मदद करता है, जो नाशवान हैं। वह इस प्रकार अपने अमर देवत्व स्व को महसूस करता है, जो अनंत अस्तित्व, अनंत ज्ञान और अनंत आनंद की प्रकृति का है। इस स्तर पर, मनुष्य अपने स्वयं के अस्तित्व तथा ब्रह्मांड के अन्य सभी अस्तित्वों के समान होने के बारे में जागरूक हो जाता है, अर्थात अनेक में एक ही आत्म की अभिव्यक्ति के रूप में। इसलिए विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा हर जगह स्वयं को स्वयं के रूप में समझने में सक्षम बनाती है। संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त एकता शिक्षा के माध्यम से महसूस की जाती है। तदनुसार, स्वामीजी के लिए मानव–निर्माण का अर्थ मनुष्य को उसके सच्चे स्व के प्रति जागरुक करना है। हालाँकि, इस प्रकार दी गई शिक्षा शरीर और मन से अलगाव में आत्मा के विकास की ओर इशारा नहीं करती है। हमें यह याद रखना होगा कि स्वामी जी के दर्शन का आधार अद्वैत है जो अनेकता में एकता का उपदेश देता है। इसलिए, उसके लिए मानव निर्माण का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास। स्वामीजी ने अपनी शिक्षा योजना में शारीरिक स्वास्थ्य पर बहुत जोर दिया है क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। वह अक्सर उपनिषद की उक्ति को उद्धृत करते हैं 'नयमात्मा बलहिनेन लभ्यः'; यानी शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति स्वयं को महसूस नहीं कर सकता है। हालाँकि, वह भौतिक संस्कृ ति के साथ–साथ मन की संस्कृति पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर देता है। स्वामीजी के अनुसार, छात्रों के मन को ध्यान, एकाग्रता और नैतिक शुद्धता के अभ्यास के माध्यम से नियंत्रित और प्रशिक्षित करना होता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि किसी भी कार्य में सभी सफलता एकाग्रता की शक्ति का परिणाम है। उदाहरण के रूप में, उन्होंने उल्लेख किया है कि प्रयोगशाला में रसायनज्ञ अपने दिमाग की सभी शक्तियों को केंद्रित करता है और उन्हें एक फोकस में लाता है–तत्वों का विश्लेषण किया जाता है– और उनके रहस्यों का पता लगाता है। एकाग्रता, जिसका अर्थ अनिवार्य रूप से अन्य चीजों से अलग होना है, ब्रह्मचर्य का एक हिस्सा है, जो उनकी शिक्षा की योजना के मार्गदर्शक आदर्श वाक्यों में से एक है। ब्रह्मचर्य, संक्षेप में, आवेगों के सामंजस्य को सुनिश्चित करने के लिए आत्म–नियंत्रण के अभ्यास के लिए खड़ा है। स्वामी जी के शिक्षा दर्शन के अनुसार, शिक्षा केवल सूचनाओं का संचय नहीं है, बल्कि जीवन के लिए एक व्यापक प्रशिक्षण है। उनके कथनानुसार: "शिक्षा का अर्थ उन सूचनाओ से नहीं है, जो बालक के मस्तिष्क में बल पूर्वक ठूसी जाती है| यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्व कोष ऋषि बन जाते |" उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो बालक का भौतिक तथा अध्यात्मिक दोनो प्रकार का विकास करे, वही वास्तविक शिक्षा है| इस प्रकार की शिक्षा को ही मानव निर्माण की शिक्षा कहा है|

स्वामी विवेकानंद भारत के एक अनुकरणीय दार्शनिक हैं जिन्होंने भारतीय धर्म को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाया। उनके दर्शन ने भारत में शैक्षिक दर्शन के विकास में बहुत योगदान दिया है। इस पुस्तक में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन को जीवन, शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण और सीखने के तरीके, शिक्षक, पाठ्यचर्या, अनुशासन और मूल्यों के साथ–साथ उनकी संक्षिप्त जीवनी के शीर्षक के साथ समझाया गया है। स्वामी विवेकानंद विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व को समझने वाले धार्मिक शिक्षकों में से एक थे। सबसे पहले स्वामीजी ने देखा कि भारत जैसे गरीब देश तकनीक में महारत हासिल करके ही गरीबी और पिछड़ेपन को दूर कर पाएंगे। दूसरा, स्वामीजी ने देखा कि विज्ञान शाश्वत आध्यात्मिक सिद्धांतों के विपरीत नहीं है, जो भारतीय संस्कृति की नींव है। विज्ञान और सनातन धर्म दोनों का संबंध सत्य से है। विज्ञान भौतिक जगत में सत्य की तलाश करता है, जबकि धर्म आध्यात्मिक क्षेत्र में सत्य की तलाश करता है। इस प्रकार, धर्म और विज्ञान पूरक हैं। शिक्षा का दूसरा प्राथमिक उद्देश्य चरित्र निर्माण और लोगों को नैतिक जीवन जीने के योग्य बनाना है। हालाँकि, यह ठीक वही क्षेत्र है जहाँ शिक्षा की अधिकांश आधुनिक प्रणालियाँ विफल हो गई हैं। स्वामी विवेकानंद ने नैतिकता की नई परिभाषा दी है। उनके

कथनानुसार "नैतिकता की एकमात्र परिभाषा दी जा सकती है: जो स्वार्थी है वह अनैतिक है, और जो निःस्वार्थ है वह नैतिक है"। स्वामीजी के लिए निःस्वार्थता और सेवा, केवल नियमों और विनियमों की नहीं बल्कि वास्तविकता की बात है। यदि ईश्वर सभी प्राणियों में सर्वोच्च आत्मा के रूप में वास करता है, यदि प्रत्येक व्यक्ति संभावित रूप से दिव्य है, तो मनुष्य में ईश्वर की सेवा करना या मनुष्य में ईश्वर की सेवा करना पूजा का सर्वोत्तम रूप है। स्वामीजी के कथनानुसार: "मानव जाति की सेवा करना एक सौभाग्य की बात है, क्योंकि यह ईश्वर की पूजा है। ईश्वर यहाँ इन सभी मानव आत्माओं में है। वह मनुष्य की आत्मा है।" (सी. डब्ल्यू. आई. 424) स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ जन्मजात क्षमताओं को लेकर पैदा होता है। परन्तु ये सभी क्षमताएं सुप्तावस्था में पड़ी रहती हैं| शिक्षा का कार्य इन्ही जन्मजात क्षमताओं को जाग्रत करना है| स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व में निहित क्षमताएं उसके संपूर्ण विकास को पूरा करने में प्रकट होती हैं। विवेकानंद के लिए शिक्षा एक मानव–निर्माण प्रक्रिया थी जिसका अर्थ होगा लोगों को अपने स्वयं के मूल्य, गरिमा और जिम्मेदारी के बारे में जागरूकता के लिए, उन्हें समाज की सभी ताकत और जीविका का स्रोत बनाना, एक ऐसे समाज का निर्माण करना जो एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करे। "वेदांत दर्शन का संपूर्ण उद्देश्य, निरंतर संघर्ष से पूर्ण बनना, दिव्य बनना, ईश्वर तक पहुंचना और ईश्वर को प्राप्त करना है।" स्वामी विवेकानंद ने केवल 20वीं शताब्दी के मनुष्य और समाज के संदर्भ में वैदिक दर्शन की मूल बातों की पुनर्व्याख्या की। विवेकानंद को शिक्षा में बहुत विश्वास था उनके अनुसार, यह मानवीय उत्कृष्टता प्राप्त करने और राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने का मूल साधन था। उन्होंने कहा कि ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसे उस जादुई शब्द "शिक्षा" से हल नहीं किया जा सकता है। उनके अनुसार "जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं कर सकती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?" उनके अनुसार शिक्षा–

भौतिक दृष्टि से: "शिक्षा वह है जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलंबी बने "

अध्यात्मिक दृष्टि से: "शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है"

सच्ची शिक्षा वह है जो बालक का भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार का विकास करे, वही वास्तविक शिक्षा है इसी प्रकार की शिक्षा को स्वामी जी ने मानव निर्माण की शिक्षा कहा है शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रों को अपने लोगों के भीतर छिपी मानवतावादी और दैवीय संभावनाओं को प्रकट करना होगा और उन स्तरों को ऊपर उठाना होगा जहां से उनकी चेतना उनके बाहरी, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण को संभालती है। सच्ची शिक्षा वही है जो ऐसा करे। उनका संदेश मानवतावाद का संदेश है। उन्होंने कहा कि जो शिक्षा हमें बौद्धिक ऊर्जा देती है, उसे हमें मानवतावादी प्रेरणा और चरित्र की ऊर्जा भी देनी चाहिए। यदि मनुष्य की शिक्षा इन दो ऊर्जा स्रोतों को जोड़ती है, तो वह अत्यधिक शक्तिशाली, सुशिक्षित और आशा से भरपूर, दृढ़ मन और इच्छाशक्ति, मांसपेशियों और तंत्रिका की शक्ति से संपन्न हो जाएगा। हालांकि स्वामी विवेकानंद एक आदर्शवादी और अध्यात्मवादी थे, जो मनुष्य में देवत्व की प्राप्ति पर जोर देते थे, फिर भी वे राष्ट्र की आवश्यकता से पूरी तरह अवगत थे। उन्होंने लोकतंत्र की सफलता के लिए शिक्षा पर जोर दिया और कहा कि लोकतंत्र को मजबूत करना शिक्षा से ही संभव है। एक लोकतंत्र की ताकत उसके सतर्क और देशभक्त नागरिकों में निहित है, जिसे शिक्षा के माध्यम से उत्पादित और विकसित किया जा सकता है | शिक्षा को प्रबुद्ध लोकतांत्रिक नागरिक तैयार करने चाहिए| हालांकि, वे शिक्षा के माध्यम से लोकतांत्रिक राजनीति का नैतिक आधार बनाने के पक्ष में थे। उन्होंने लोगों में लोकतांत्रिक सहिष्णुता और वास्तव में स्वतंत्र होने की भावना विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया जिसे उचित रूप से संगठित और सही ढंग से संचालित शिक्षा से पूरा किया जा सकता है। इस प्रकार, विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन में लक्ष्य के दो प्रमुख घटक थे– एक व्यक्ति का लक्ष्य और दूसरा सामाजिक लक्ष्य। शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्यों के तहत उन्होंने बच्चे के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास सहित संपूर्ण मानव विकास पर जोर दिया। उन्होंने व्यावसायिक विकास के लक्ष्य को भी नहीं छोड़ा। एक तरह से वे मानव–निर्माण शिक्षा के अवतार के रूप में खड़े थे। शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों के तहत उन्होंने नागरिकता और लोकतंत्र के लिए शिक्षा, राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा, गरीबों के लिए शिक्षा और महिलाओं के लिए शिक्षा, पूरे समाज को मजबूत करने के लिए शिक्षा पर जोर दिया। एक तरह से वे राष्ट्र निर्माण शिक्षा के पक्षधर थे। लेकिन, इन दोनों पहलुओं को उन्होंने अलग और स्वतंत्र नहीं माना। उन्होंने शिक्षा के व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्यों के बीच एक अच्छा संश्लेषण लाया जब उन्होंने कहा कि "केवल वही जीते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं, बाकी जीवित से ज्यादा मृतक के समान हैं।"

अरबिंदो घोष का शैक्षिक दर्शन

दार्शनिक अरबिंदो (1872–1950) को 20वीं सदी के पुनर्जागरण व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। भारत के कोलकाता में जन्मे अरबिंदो की शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई थी। वह एक बुद्धिजीवी थे जिन्होंने मानव और सामाजिक विकास का गहन विश्लेषण किया। अरबिंदो घोष मूल रूप से एक आदर्शवादी थे। उनका जीवन का आदर्शवादी दर्शन उपनिषद के वेदांतिक दर्शन पर आधारित था। उनका कहना है कि हमें अपने देश में जिस तरह की शिक्षा की आवश्यकता है, वह ऐसी शिक्षा है जो "भारतीय आत्मा, आवश्यकता, स्वभाव और संस्कृति के अनुरूप हो, जिसकी हम तलाश कर रहे हैं वास्तव में यह केवल अतीत के प्रति वफादार नहीं, बल्कि विकासशील आत्मा के लिए हो, भारत की, उसकी भविष्य की आवश्यकता के लिए, उसके आने वाले स्व–सृजन की महानता के लिए, उसकी शाश्वत आत्मा के लिए हो। "

श्री अरबिंदो प्रचलित शिक्षा प्रणाली से असंतुष्ट थे सूचनाओं का संग्रह मात्र शिक्षा नहीं है बल्कि शिक्षा बालको के मस्तिष्क, आत्मा चरित्र और राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए | शिक्षा को वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए | शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक की आन्तरिक शक्तियों का विकास करे उनके अनुसार – "सच्ची शिक्षा को मशीन से बना सूत नहीं होना चाहिए, अपितु इसका मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण तथा जीवित उत्कर्ष करना चाहिए|" श्री अरबिंदो बताते हैं कि सवाल आधुनिकता और पुरातनता के बीच नहीं है, बल्कि एक आयातित सभ्यता और भारतीय मन और प्रकृति की अधिक संभावनाओं के बीच है, वर्तमान और अतीत के बीच नहीं, बल्कि अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच है। उन्होंने कहा कि "राष्ट्रीय शिक्षा की मांग की जीवंत भावना को अब स्वदेशी की जीवित भावना की तुलना में भास्कर के खगोल विज्ञान और गणित या नालंदा प्रणाली के रूपों की वापसी की आवश्यकता नहीं है, और ना ही रेलवे मोटर ट्रैक्शन से प्राचीन रथ और बैलगाड़ी पर वापसी की आवश्यकता है।" उन्होंने फिर से कहा कि सवाल यह नहीं है कि कौन सी

भाषा, संस्कृत या कोई अन्य भाषा , किसी भी तरीके से प्राप्त की जानी चाहिए, जो सबसे स्वाभाविक, कुशल और मन को उत्तेजित करने वाली हो, बल्कि महत्वपूर्ण सवाल यह है कि हमें संस्कृत कैसे सीखनी है और उसका उपयोग कैसे करना है। ताकि हमें हमारी अपनी संस्कृति का दिल और अंतरंगता की समझ प्राप्त हो सके और हमारे अतीत की अभी भी जीवित शक्ति और हमारे भविष्य की अभी तक न बनाई गई शक्ति के बीच एक ज्वलंत निरंतरता स्थापित हो और हम अंग्रेजी या किसी अन्य विदेशी भाषा को कैसे सीखें और उपयोग करें ताकि अन्य देशों के जीवन, विचारों और संस्कृति को उपयोगी रूप से जान सकें और अपने आसपास की दुनिया के साथ अपने सही संबंध स्थापित कर सकें। उन्होंने तर्क दिया कि एक सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा का उद्देश्य और सिद्धांत आधुनिक सत्य और ज्ञान की उपेक्षा करना नहीं है, बल्कि अपनी नींव को भारत के अपने अस्तित्व, अपने मन और अपनी आत्मा पर ले जाना है।

अरबिंदो ने बच्चे को अपने सभी गुप्त क्षमताओं को अधिकतम विकसित करने के लिए मुक्त वातावरण निर्धारित किया और सुझाव दिया कि उन सभी विषयों और गतिविधियों में रचनात्मकता और शैक्षिक अभिव्यक्ति के तत्व होने चाहिए। वह प्रत्येक विषय और गतिविधि में एक नया जीवन और भावना डालना चाहते थे जिसके माध्यम से अत्युतम मानव ख्सुपर ह्यूमन, का विकास संभव हो सके। उन्होंने पाठ्यक्रम के लिए निम्नलिखित सिद्धांत निर्धारित किए–

- पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जो बच्चे को रुचिकर लगे।
- इसमें उन सभी विषयों को शामिल किया जाना चाहिए जो मानसिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देते हैं।
- इसे बच्चों को पूरी दुनिया के ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- इसमें जीवन की रचनात्मकता और रचनात्मक क्षमताएं होनी चाहिए|
- अरबिंदो शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए पाठ्यक्रम का वर्णन करते है–
- प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, राष्ट्रीय इतिहास, कला, चित्रकला, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और अंकगणित पढ़ाया जाना चाहिए।
- माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, अंकगणित, कला, रसायन विज्ञान, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक अध्ययन।
- विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय और पश्चिमी दर्शन, सभ्यता का इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, फ्रेंच, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, रसायन विज्ञान, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान।
- व्यावसायिक स्तर पर कला, पेंटिंग, फोटोग्राफी, मूर्तिकला, ड्राइंग, प्रकार, कुटीर–उद्योग, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, नर्सिंग आदि|

अरबिंदो अच्छे शिक्षण के कुछ ठोस सिद्धांतों को प्रतिपादित करते हैं, जिन्हें वास्तव में सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होने पर ध्यान में रखा जाना चाहिए। उनके अनुसार, "सच्ची शिक्षा को मशीन से बना सूत नहीं होना चाहिए अपितु इसे मानव के मष्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण अथवा जीवित उत्कर्ष करना चाहिए |" श्री अरबिंदो के अनुसार, सच्ची शिक्षा का पहला सिद्धांत है "कि कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता।" वह बताते हैं कि ज्ञान बच्चे के भीतर पहले से ही निष्क्रिय अवस्था में विद्यमान है, और शिक्षक का कार्य इसी क्षमता को जाग्रत करना है| इसी कारण से शिक्षक प्रशिक्षक या कार्य–स्वामी नहीं है; "वह एक सहायक और एक मार्गदर्शक है।" शिक्षक की भूमिका "सुझाव देना है न कि थोपना"। वह वास्तव में शिष्य के दिमाग को प्रशिक्षित नहीं करता है, वह केवल उसे दिखाता है कि ज्ञान के उपकरणों को कैसे परिपूर्ण किया जाए और इस प्रक्रिया में उसकी मदद और प्रोत्साहित किया जाए। वह उसे ज्ञान नहीं देता; वह उसे दिखाता है कि अपने लिए ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाए। वह उस ज्ञान का आह्वान नहीं करता जो भीतर है; वह केवल उसे दिखाता है कि वह कहाँ है और सतह पर उठने की उसकी आदत कैसे हो सकती है।

विद्यालय

श्री अरबिंदो के शिक्षा दर्शन का उद्देश्य स्कूल के पाठ्यक्रम को संशोधित करना, सीखने के तौर–तरीकों को अधिकतम करना, बच्चे को अपनी गति और स्तर पर अपनी क्षमता हासिल करने में मदद करना और खुद को खोजने के लिए अपना समय समर्पित करना है। इस तरह की स्कूली शिक्षा को निर्धारित पाठ्यक्रमों और शिक्षण की एक थोपी गई एकरूपता के विरोधी के रूप में देखा जाता है, जिसे पारंपरिक स्कूल करना चाहते हैं और इसे औपनिवेशिक शासन के तहत स्कूलों में पढ़ाए जाने से जोड़ा जा सकता है। श्री अरबिंदो ने जिस प्रकार की स्कूली शिक्षा की कल्पना की थी, उसे स्कूल में और घर पर बच्चे के जीवन के बीच की खाई को पाटने के लक्ष्य के रूप में देखा जाता है।

श्री अरबिंदो के शैक्षिक विचारों के विपरीत, भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली विशुद्ध रूप से एक सूचना–आधारित उद्यम है, जो एक विषय–समयबद्ध पाठ्यक्रम द्वारा समर्थित है, जो न तो शिक्षार्थी की आवश्यकताओं या क्षमताओं से संबंधित है और न ही बच्चों के सफलतापूर्वक सीखने के तरीके को ध्यान में रखते हुए। यह बाल–उन्मुख होने के बजाय विषय–उन्मुख है। स्कूल दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत विकास और दूसरों के कल्याण के लिए एक दूसरे के सहयोग से और एक दूसरे से सीखने की तुलना में बेहतर अंक या ग्रेड प्राप्त करने के लिए विषय वस्तु की महारत पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

बच्चों को एक मुक्त वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे अपने स्वयं के प्रयासों से अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। उनके अनुसार कोई भी मुकर्रर और थोपा गया वातावरण विकास और प्राकृतिक विकास को रोकता है। अरबिंदो ने आत्म अनुशासन की अवधारणा का प्रचार किया जो प्रभाववादी अनुशासन का इलाज था।

1947 में, भारत की मुक्ति के बाद, श्री अरबिंदो ने अपनी आत्मा साथी और सामाजिक साथी, मीरा अल्फासा ("माँ") के साथ, एकात्म योग और ग्रह सामाजिक सक्रियता को आगे बढ़ाकर पूरी मानवता को सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से मुक्त करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया| श्री अरबिंदो घोष ने दार्शनिक रूप से पश्चिमी वैज्ञानिक तर्कवाद को पूर्वी पारलौकिक तत्वमीमांसा के साथ वास्तविकता के समग्र आख्यान में समेटने का प्रयास किया। उनकी अकादमिक रुचि क्षेत्र में अंतः विषय थी: राजनीति विज्ञान, शिक्षा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और दर्शन। वह पश्चिमी विचारों से गहराई से प्रभावित थे, सबसे महत्वपूर्ण रूप से, चार्ल्स डार्विन के विकासवादी सिद्धांत और फ्रांसीसी बौद्धिक हेनरी बर्गसन के संज्ञानात्मक विकास के दर्शन|

भारतीय विचारकों ने शिक्षा के दर्शन और ज्ञान, बुद्धि, मन और शिक्षण और सीखने के कार्यों जैसे सभी संबंधित पहलुओं पर ध्यान दिया है, जिनके ग्रंथों में पर्याप्त संदर्भ हैं और श्री कृष्ण, विदुर, भीष्म जैसे प्राचीन शिक्षकों के लिए। महाभारत में द्रोणाचार्य और रामायण में वशिष्ठ। बहुत बाद के चरण में, सुश्रुत जैसे शिक्षकों से मुलाकात होती है, जो अपने छात्रों को आयुर्वेद पढ़ाते हैं, एक आदर्श शिक्षक और एक आदर्श छात्र की विशेषताओं का चित्रण करते हैं। बुद्ध और महावीर महान शिक्षक रहे हैं। उपलब्ध पाठ्य साक्ष्यों से उनकी शिक्षाओं में सन्निहित शिक्षण और सीखने के सिद्धांतों को निकालना भी सार्थक हो सकता है। शिक्षण और

सीखने पर भारतीय प्रवचन की गुणवत्ता को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। मध्यकालीन समय में धार्मिक और व्यावसायिक दोनों प्रकार के प्रभावी शिक्षकों के कई और उदाहरण हैं, जिन्हें वर्तमान समय के शैक्षिक विचारों की मुख्य नींव के रूप में लिया जा सकता है।

दुर्भाग्य से, हाल के दिनों में शैक्षिक निर्णयों में विवेकानंद, टैगोर, अरबिंदो, तिलक, जाकिर हुसैन, राधाकृष्णन और महात्मा गांधी के योगदान को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं किया गया है। उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के सिद्धांतों की समीक्षा करने और वर्तमान संदर्भ में उनकी वैधता की जांच करने का समय आ गया है।

श्री अरबिंदो के विचार एक प्रसिद्ध विद्वान और अंतरराष्ट्रीय ख्याति के लेखक प्रो मनोज दास द्वारा लिखे गए हैं। श्री अरबिंदो ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा हमारे वास्तविक आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, शिक्षा को गतिशील नागरिक बनाना चाहिए ताकि वे आधुनिक जटिल जीवन की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हों। उनके अनुसार, शारीरिक विकास और पवित्रता शिक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं। उन्होंने केवल शारीरिक विकास पर ही नहीं, बल्कि शारीरिक शुद्धता पर भी जोर दिया, जिसके बिना आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है। इस अर्थ में शारीरिक विकास और शुद्धि दो आधार हैं जिन पर आध्यात्मिक विकास का निर्माण होता है। शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य सुनने, बोलने, सुनने, स्पर्श करने, सूंघने और चखने की सभी इंद्रियों को प्रशिक्षित करना है। उनके अनुसार तंत्रिका, चित्त और मानस शुद्ध होने पर इन इंद्रियों को पूरी तरह से प्रशिक्षित किया जा सकता है।

अतः शिक्षा के माध्यम से किसी भी विकास के संभव होने से पहले इन्द्रियों की पवित्रता प्राप्त की जानी चाहिए। शिक्षा का तीसरा उद्देश्य बालक का मानसिक विकास करना है। इस मानसिक विकास का अर्थ है सभी मानसिक क्षमताओं की वृद्धि अर्थात् स्मृति, सोच, तर्क, कल्पना और भेदभाव आदि। शिक्षा उन्हें पूरी तरह से और सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित करनी चाहिए। शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य नैतिकता का विकास है। श्री अरबिंदो ने इस बात पर जोर दिया है कि केवल नैतिक और भावनात्मक विकास के बिना मानसिक विकास मानव प्रक्रिया के लिए हानिकारक हो जाता है। बच्चे का हृदय इतना विकसित होना चाहिए कि वह सभी जीवों के प्रति अत्यधिक प्रेम, सहानुभूति और सम्मान प्रदर्शित करे। यही वास्तविक नैतिक विकास है। अंतरात्मा का विकास शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य है जिसे शिक्षक की सहायता से विकसित करने की आवश्यकता है। विवेक के चार स्तर हैं चित्त, मानस, बुद्धि और ज्ञान। अरबिंदो ने जोर दिया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य के अपने भीतर ईश्वरीय अस्तित्व का कोई न कोई अंश होता है और शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति से उसकी संपूर्णता के साथ उसका अध्ययन कर सकती है।

निष्कर्ष

विवेकानंद और अरबिंदो दोनों पश्चिमी विचारों और ईसाई विचारों से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने इन प्रभावों के लिए काफी अलग तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त की। हालांकि, विवेकानंद का विचार ईसाई धर्म और हिंदू धर्म के बीच समझ और संवाद के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करने की संभावना नहीं है। पश्चिमी प्रभावों के प्रति अधिक सकारात्मक हिंदू प्रतिक्रिया श्री अरबिंदो के लेखन में पाई जाती है। पश्चिम के साथ उनका संपर्क, एक संकर शिक्षा और अमेरिका और यूरोप की क्षणभंगुर यात्राओं द्वारा विवेकानंद को दिए गए संपर्क से कहीं अधिक निकट था। पश्चिम के बारे में अरबिंदो का अनुभव बहुत लंबी अवधि में बढ़ा। अरबिंदो ने ग्रीक और लैटिन, अंग्रेजी और यूरोपीय इतिहास और फ्रेंच का अध्ययन किया, और इन विषयों के साथ अपने प्रारंभिक वर्षों को उन ताकतों के प्रभाव में प्रस्तुत किया जिन्होंने सदियों से पश्चिमी विचार और संस्कृति को आकार दिया था। विवेकानंद के विपरीत, अरबिंदो को अपने जीवन की एक संक्षिप्त अवधि के लिए केवल पश्चिमी विचारों के संपर्क में नहीं रखा गया था; उन्हें अपनी शिक्षा की पूरी प्रक्रिया द्वारा एक पश्चिमी की तरह सोचने और जीने के लिए बनाया गया था। इन दोनों बुद्धिमान व्यक्तियों ने पश्चिम के बारे में बहुत ही विविध तरीकों से प्रतिक्रिया दी। विवेकानंद के अनुसार पश्चिम संगठन के कुछ मॉडल दे सकता है, लेकिन धार्मिक सत्य के संदर्भ में हिंदू धर्म कहीं अधिक श्रेष्ठ है। निश्चय ही, विवेकानंद ने 19 वीं शताब्दी के अंत में हिंदू धर्म को नए आत्मविश्वास के शिखर पर पहुंचने का कार्य किया । अरबिंदो का मानना था कि पश्चिमी सोच को ठुकराने की कोई जरूरत नहीं है और वह अपने एकात्म योग में भारतीय और पश्चिमी सोच के विविध ज्ञान को जोड़ सकते हैं। ईश्वर के बारे में अरबिंदो और विवेकानंद के बीच मतभेद स्पष्ट हैं। विवेकानंद अद्वैत और शंकराचार्य के दर्शन के अनुरूप थे, हालांकि, निश्चित रूप से, वे यहां अपने गुरु, श्री रामकृष्ण के कम सुसंगत दृ ष्टिकोण से सहमत नहीं थे। अरबिंदो ने महसूस किया कि ईश्वर में विश्वास धार्मिक जीवन का एक अनिवार्य घटक है। समग्र योग पर उनकी शिक्षा एक जागरूक प्राणी के उच्चतम अस्तित्व पर प्रकाश डालती है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है, की दोनों विद्वानों के शैक्षिक विचार वर्तमान समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, इन्होने हमारे देश की अध्यात्मिक श्रेष्टता और पाश्चात्य देशो की भौतिक श्रेष्टता से परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवम अध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया| उन्होंने उदघोष किया कि "भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम करो, उसे स्वावलंबी बनाओ ,आत्मा निर्भर बनाओ, निर्भय बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ, और इन सबसे ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ, ओ मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो सके|" वर्तमान भारत की यही आवश्यकता है|

संदर्भ सूची

1. "A View of India on the War" in Asiatic Review. London,1915:6(5):369-374.
2. Religion and Life, Leaflet No. 15, The Theistic Endeavor Society of Madras. November, 1915, 11.
3. "The Vedantic Approach to Reality" in the Monist,1916:26(2):200–231.
4. "Bergson's Idea of God" in the Quest. London, 1916:7(10):1–8.
5. "Religion and Life" in The International Journal of Ethics. 1916:27(1):91–106.
6. "The Philosophy of RabindranathTagore–I" in the Quest. 1917:8(3):457–477.
7. "The Philosophy of Rabindranath Tagore–II" in the Quest. 1917:8(4):592–612.
8. "TheVedanta Philosophyand the Doctrine of Maya" in the International Journal of Ethics,1914:24(4):431–451.
9. "Vedantamum Mayavadamumin Cittantam" in Siddhantam, Journalof the Saiva Siddhanta Association,1914:5:159-163.
10. Chadha Y. RediscoveringGandhi, London, Century, 1997.
11. Gandhi MK. The Collected Works, Ahmedabad, Navajivan, 1977.

12. Dr. Gupta Aruna, Dr. Tondan Uma, Teacher in Emerging Indian Society, Alok Prakashan Lucknow, 2014.
13. Gandhi MK. Hind Swaraj andother writings, Cambridge, Cambridge University Press, 1997.
14. Kumar K. ‘Mohandas Karamchand Gandhi’ in Z. Morsy, ed. Thinkerson Education, Paris, UNESCO, 1994, 2.
15. Lal, Raman bihari, Philosophical and Sociological principles of education Rastogi Publication Meerut, 2007.
16. Saxena N. Swarup, Philosophical and Sociological principles of education, R. Lal book Depot Meerut, 2008.